अध्याय पैंतालीसवाँ

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढ़ाय नमः॥

"आप के दिव्य रूप का मन में चिंतन करने से सारे सांसारिक कष्टों का विनाश होता है। भेद की भावना नष्ट हुए मेरे मन में अब आप प्रवेश कीजिए; मैं श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी को प्रणाम करता हूँ।"

हे भगवान सिद्धारूढ़जी, मेरा आपको प्रणाम। आपकी कृपा से मनुष्य को सुख की प्राप्ति होती है तथा जो आपके स्वरूप से एकरूप होते हैं, आप उनके भव पाश ज्ञान के शस्त्र से तोड़ देते हैं। ईश्वर अप्रत्यक्ष होकर मनुष्य की आँखों को दिखाई नहीं पड़ता, उसे ज्ञान तथा तर्क से जानना पड़ता है। इसलिए उसके प्रति मन में भक्तिभाव उत्पन्न नहीं होता, परंतु आप जीवात्माओं को प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देते हैं, जिससे आप का चिंतन करना उन्हें आसान हो जाता है। आप ने भक्तों के लिए अवतार धारण किया हुआ है तथा आप ने अनेक प्रकार के चमत्कार और लीलाएँ दिखाई हैं। उन लीलाओं का मुख से कथन करने से मन शुद्ध होकर ज्ञान प्राप्ति का अधिकार प्राप्त होता है, तथा प्रेम वृद्धि होती है। सभी भक्त कहते हैं की उस प्रेम से प्राप्त होने वाले आनंद से कोई भी वस्तु अधिक महत्वपूर्ण नहीं है; ऐसा प्रेम शाश्वत सुख देता है। जिससे वेदशास्त्रों का पठण किए बगैर ही भक्तों का उद्धार होता है तथा निश्चित रूप से वे भव सागर पार कर जाते हैं। भक्तों का सारा भार सतगुरुजी पर ही होने के कारण, वे उन्हें संकट के समय प्रसन्न होते हैं, इसलिए भक्तगण हृदय में गुरुदेव का चिंतन करते हुए निश्चिंत मन से घर गृहस्थी निभाते रहते हैं।

अस्तु। हुबली में नारायण मोडक नाम का एक ब्राह्मण रहता था, उसके एक बेटी थी जिसका नाम चंपू था। वह विवाह योग्य होने के कारण बहुत कष्टों के बाद ढूंढकर उसके लिए योग्य वर मिल गया। उसके पश्चात नारायण ने सिद्धाश्रम जाकर गुरुदेव से प्रार्थना की, क्योंकि नारायण तथा उसके घर के सभी सदस्य सिद्धारूढ़जी की अनन्य भाव से भक्ति करते थे। नारायण प्रतिदिन सिद्धारूढ़जी का चिंतन करता था। ऐसे सद्भक्त नारायण ने सिद्धाश्रम आकर गुरुदेव से दीनता से प्रार्थना की, "हे गुरु महाराजजी, चंपू का विवाह निर्विघ्नता से संपन्न हो जाए।" उसके शब्द सुनकर सतगुरुजी ने कहा, "आप सभी

सतगुरुजी के चिंतन में लीन रहते हैं, तब संकट कैसे आएगा?" इस प्रकार सतगुरुजी से संरक्षण की प्रतिभूति मिलने के पश्चात नारायण मन ही मन संतुष्ट हुआ तथा घर लौटकर उसने विवाह के लिए आवश्यक सारी सामग्री जुटाना शुरु किया। पुरोहित ने विवाह के लिए फाल्गुन महीने के शुद्धपक्ष के व्दितीया का महूरत तय किया। परंतु विवाह में जब दो दिन ही थे, तब एक बहुत बड़ा संकट आया।

दुलहन चंपू को बहुत ज्वर आया और दूसरे दिन ज्वर बढ़ता ही गया; बहुत सारी कोशिशों के बावजूद भी जब ज्वर नहीं उतरा, तब घर के सदस्य बहुत चिंतित हो गए। इतने में बारात आ गयी; सभी बारातियों को जनवासे में बिठाकर नाराय़ण घर लौटा और चंपू को देखकर भयभीत हो गया। चंपू बेहोश हो गयी थी और ज्वर में बर्रा रही थी, उसे देखकर नारायण को घोर चिंता हो गयी। वह कहने लगा, "हे सतगुरुनाथजी, अब आप ही हमारी रक्षा कीजिए। आप ही के आशिर्वाद से चंपू को सद्गुणी वर मिल गया परंतु विवाह के ऐन मौके पर हम इस घोर संकट में पड़ गये है, इसलिए आप ही इस संकट का निवारण कीजिए। अब हम किसी डॉक्टर तथा वैद्य की खोज में जाने वाले नहीं हैं। अब हम आप के चरणों में शरण आए हैं, जो कुछ करना है, वह आप ही कीजिए। इसके अलावा हमें अन्य कोई भी उपाय पता नहीं है। गुरुनाथजी, दौड़कर आईए और हमारी लाज रखिए, बारात तो कब की आ चुकी है, अब हम क्या करें? सतगुरुदेव, अब आप हमारी परीक्षा मत कीजिए, कृपा करके जल्दी आईए। यह सारा जगत आप ही का है, आप के सिवाय दूसरा कौन हैं हमारा? इस विवाह में कोई भी संकट न आए ऐसी प्रार्थना मैंने आप से पहले ही की थी, तथा आप ने हमारी रक्षा करने की प्रतिभूति भी दी थी; अब आप हमारा साथ कैसे छोड़ सकते हैं? आप अपना बाना मत छोड़िए। इस समय, आप के बिना हम अनाथ हैं। आप कब हमें प्रसन्न हो जाएँगे, इसी बात की हमें घोर चिंता लगी हुई है।" नारायण की प्रार्थना पूर्ण होने से पहले उसके कक्ष का दरवाजा खुल गया और सिद्धसतगुरुजी प्रकट हुए, नारायण दौड़ता हुआ चला आया और सतगुरुजी को लेकर अंदर आया। उसने कहा, "हे सिद्धनाथजी, आप ने मेरी करूणाभरी प्रार्थना सुनी और तत्काल चले आए। आप ही भक्तों के सखा तथा दीनबंधु हैं।" बोलते

बोलते नारायण का गला रूंध गया, आँखों से अश्रुधाराएँ बहने लगी तथा मन में गुरु प्रेम की भावना उमड़ आने के कारण उसने झट से सतगुरुजी चरण छू लिए। उसपर सतगुरुजी चंपू के निकट आए, उन्होंने उसे एक बार कृपादृष्टि से देखा और कहा, "आप भयभीत मत हो जाईए, चिंतारहित होकर सतगुरुजी नामस्मरण करते रहिए। उन्ही की कृपा से विवाह का कार्य निर्विघ्नता से संपन्न हो जाएगा, इसलिए आप भयभीत मत होना। अगर कोई संकट उत्पन्न हो ही गया तो सतगुरु स्वयं आकर इस विवाह को संपन्न करवाएँगे।" ऐसा कहकर सतगुरुजी ने चंपू के सिर पर हाथ रखते ही तत्काल उसका ज्वर उतर गया, यह देखकर नारायण अत्यंत आनंदित हुआ। इसके पश्चात सतगुरुजी वहीं अंतर्धान हुए, नारायण ने मन ही मन कहा, "मैंने दयाघन सतगुरुजी की पूजा तक नहीं की।" उसके पश्चात सचेत होकर उसने घर के सभी सदस्यों को बुलाकर सिद्धारूढ़ ईश्वर ने चंपू को ठीक करने की बात बतायी। सभी लोग अत्यंत हर्षित हुए तथा सतगुरुजी प्रसन्न होने के कारण संकट का निवारण हुआ ऐसा कहते हुए उन्होंने सतगुरुजी की जयजयकार की। सभी सदस्य चंपू के समीप आकर उसे देखने लगे, तो उसके सारे शरीर पर उठी हुई फुन्सियाँ देखते ही वे भयभीत हो गए और कहने लगे कि यह दूसरा संकट सामने आया है। दूसरे दिन चंपू को देखते ही आसपास के सभी लोग कहने लगे की उसे चेचक हुआ है। यह सुनते ही बड़ा कठिन अवसर है यह जानकर घर के सभी सदस्य तड़पने लगे। चेचक रोग का परिणाम क्या होगा कुछ कह नहीं सकते; अगर उसकी दृष्टि चली जाए या चेचक की फुन्सियों के व्रण चेहरे पर कायम रूप से रह जाए तो विवाह के ऐन अवसर पर क्या होगा, इस प्रकार के चिंताजनक विचार मन में आने के कारण घर के सदस्य असमंजस में पड़ गए। चंपू के ससुरालवालों ने आकर उसकी स्थिति देखी और सोचा की होने वाली बहु की तंदुरुस्ती निश्चित रूप से केवल ईश्वर के हाथ में है।

उनमें से किसी ने कहा की यहीं रहकर चंपू के रोग मुक्त होने का इंतजार करेंगे तो किसी और ने कहा की वापस अपने गाँव लौटकर चंपू की स्थिति में सुधार आने के पश्चात फिर से विवाह के लिए आएँगे। उसपर समधी ने नारायण से कहा, "नारायणजी, फिलहाल हम गाँव लौटना चाहते हैं; आगे

चलकर परिस्थिति में सुधार आने के पश्चात फिर से हम विवाह के लिए आएँगे, इसलिए आप बिलकुल चिंता मत कीजिए।" उदास मन से नारायण ने कहा, "आप सभी लोग एक दिन और चैन से यहीं रह लीजिए, उसके पश्चात जो ईश्वर की मरजी होगी वही होगा, हमें चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।" दुल्हा उसके मित्रों से कहने लगा, "मान लो की कल सुबह उसके साथ विवाह कर लेने के पश्चात अगर उसकी दृष्टि गयी तो मैं क्या करूँ, आप ही बताईए। इतनाही नहीं वह बदसूरत हो जाएगी, इसलिए मैं इस विवाह के लिए तैयार नहीं हूँ। मेरा समय खराब होने के कारण ऐसा हुआ होगा; मेरी समझ में नहीं आता अब मुझे क्या करना चाहिए।" बाराती आपस में फुसफुसाकर कहने लगे की कदाचित विवाह के लिए शुभ अवसर नहीं है, ऐसी स्थिति में अगर विवाह संपन्न किया जाए तो न जाने आगे क्या हो! ये सारी बातें सुनकर नारायण चिंतित हो गया। परंतु उसे सतगुरुजी के शब्दों का स्मरण हुआ की अगर कोई संकट आएगा तो स्वयं सतगुरुनाथजी उस संकट का निवारण करके कार्य संपन्न कराएँगे। उसपर उसने सतगुरुजी को घर आमंत्रित करने का निश्चय किया, ताकि उनके आगमन से बारातियों के मन के सारे संदेह दूर हो जाएँगे। तुरंत नारायण तांगे में बैठकर सिद्धाश्रम पहुँचा तथा भाव भक्ति से सतगुरुजी के चरण पकड़कर उसने प्रार्थना की, "हे सतगुरुनाथजी, हम पर बड़ा घोर संकट आया है। क्या करें समझ में नहीं आ रहा है, हम बहुत चिंतित हैं। हालाँकि आप की कृपा से चंपू का ज्वर तो उतर गया, परंतु अब उसके पूरे शरीर पर चेचक की फुन्सियाँ उठी हैं। चंपू के ससुरालवालों का विवाह न रचाने का इरादा लग रहा है, अब मैं क्या करूँ? बाराती एकबार चले गए तो फिर से लौटेंगे या नहीं, कुछ कह नहीं सकते, दूसरी बात यह है की अगर बाराती चले गए तो चंपू को दूसरा वर भी नहीं मिलेगा। इसलिए, हे दयालु सतगुरुनाथजी, आप अभी, इसी समय मेरे घर पधारिए; सभी लोगों की उपस्थिति में आप की पूजा करने से उनके मन के सारे संदेह दूर हो जाएँगे। मैंने मन ही मन यह निर्धार किया है, इसलिए कृपा करके आप मेरे घर चलकर मुझ से यथाविधि पूजा करवाईए, यही मेरी आप से बिनती है।" उसकी विनम्रता देखकर गुरुनाथजी आनंदित हुए और नारायण के साथ वे उसके घर गए। उन्हें देखकर हर्षित हुए घर के सभी सदस्यों

ने दौड़ते हुए आकर उनके चरण छू लिए। मँडवे में एक सुंदर आसन बिछाकर उसपर सिद्धनाथजी को बिठाया, उसपर उनकी षोड़शोपचारों से पूजा करके उनकी आराधना की गई।

सभी बारातियों ने भी सिद्धारूढ़जी के चरण छुए तथा उन्होंने दुल्हे को उनके चरण छूकर उनका आशिर्वाद लेने के लिए कहा। सिद्धनाथजी के चेहरे पर फैली दिव्य प्रभा देखकर उन सभी के मन के सारे भ्रम पिघलते हुए कुहरे के समान दूर हो गए। जिस प्रकार सूर्योदय होते ही अँधेरा दूर हो जाता है तथा हृदय में आत्मज्ञान की ज्योति जलते ही वहाँ दुर्गुणों को स्थान नहीं रहता, उसी प्रकार सिद्धनाथजी को देखते ही उनके मन की भ्रांति दूर हो गयी; वहाँ केवल सतगुरुजी के शब्दों का अपार प्रेम रह गया! सतगुरुजी ने कहा, "नारायण, सुन, दुल्हा दुलहन का विवाह संपन्न हो जाएगा तो दुलहन रोग मुक्त हो जाएगी, इसलिए सतगुरुजी का नाम लेकर विवाह संपन्न करो।" ऐसा कहकर सतगुरुजी ने हाथ में अक्षत लेकर दुलहा दुलहन के सिर पर डाले, जिसे देखकर सभी लोगों ने चैन की साँस ली। सतगुरुनाथजी को अच्छी तरह से भोजन खिलाकर नारायण ने उन्हें सिद्धाश्रम तक पहुँचाया, और लौटकर देखता है तो सभी ससुरालवालों के चेहरे प्रसन्न लग रहे थे। सभी के मन के संदेह दूर हो गये थे। दुल्हे ने उसके रिश्तेदारों से कहा, "हम सभी विवाह के लिए ही हुबली आए हैं, ऐसा होते हुए विवाह संपन्न हुए बगैर वापस अपने गाँव लौटना बड़ा लज्जास्पद होगा; और जिस कार्य के लिए हम सभी यहाँ पधारे हैं वह पूर्ण नहीं हुआ तो लोग हम पर हँसेंगे, इसलिए मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा। इस बीमारी से अगर दुलहन में कोई ऐब उत्पन्न हुआ तो भी मैं उसी से विवाह करुँगा, यही मेरा निश्चय है। सब से महत्वपूर्ण बात तो यह है की उस महान संत ने आकर दुलहन ठीक हो जाएगी ऐसा कहा है और मेरा उनकी बातों पर पूरा विश्वास है; केवल आशिर्वाद न देते हुए उन्होंने हमारा विवाह संपन्न किया है।" सभी बारातियों ने दुल्हे के मन की बात समझते हुए विवाह के लिए अनुज्ञा दे दी और कहा, "दुल्हन का स्वास्थ्य थोड़ा और सुधर जाने के पश्चात दुल्हा-दुल्हन का विवाह संपन्न कराएँगे।" सतगुरुजी अंतर्यामी होने के कारण सभी के हृदय में निवास करते हुए जीवात्माओं को कर्म करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं;

जीवात्मा स्वयं के प्रति स्वयं ही निर्णय करने के लिए स्वतंत्र नहीं रहता। ये बातें करने के पश्चात जब बारातियों ने जाकर चंपू को देखा तो वह उठकर खड़ी हुई थी। उसे देखते ही सभी की चिंता दूर हो गयी और वे कहने लगे की अब विवाह संपन्न कराएँगे। विवाह का महूरत समीप आते ही दुल्हा-दुल्हन को मंडप में लाया गया और मंगलकारक मंत्रों के घोष में सभी ने दुल्हा-दुल्हन के सिर पर अक्षत डाल दिए। विवाह का समारोह चार दिन तक चलता रहा, उसके पश्चात दुल्हा-दुल्हन को लेकर नारायण गुरुदेव के दर्शन के लिए गया; सभी ने उनके चरण छुए। नारायण ने कहा, "हे सतगुरुनाथजी, पहले संकट की स्थिति का निर्माण करके, उसके उपरांत उचित समय पर संकट में हमारी मदद करके, इस भव सागर के पार जाते समय हम पर आने वाले दुख तथा संकटों के भय का विनाश करके आप ने अपना 'भवमोचन' (भवकृद्भयनाशन) यह नाम सार्थ किया है।" उसपर दयाघन सतगुरुजी ने नये जोड़े को आशिर्वाद देकर भेज दिया। सभी लोग सतगुरुजी को प्रणाम करके घर लौटे। लोगों पर संकट आने से सतगुरुजी का उद्धार कार्य सफल होता है, अन्यथा लोग सतगुरुजी को पूर्णत: भूलकर निर्भय होकर घर गृहस्थी में तल्लीन हो जाते हैं। अगर ऐसा ही सिलसिला चलता रहा तो जीवात्माएँ अपना हित कभी भी समझ नहीं पाएँगे, इसीलिए, दयालु सतगुरुजी उन्हें भयभीत करके जगाते हैं, जिसके पश्चात वे सतगुरुजी के पास दौड़ते हुए चले आते हैं।

अब इस कथा का लक्ष्यार्थ सुनिए। नारायण को जीवात्मा समझें। उसकी पुत्री चंपू को भक्ति समझें। उसके लिए वैराग्य को ही दुल्हा चुन लिया, परंतु भक्ति को प्रपंच रूपी ज्वर चढ़गया। सतगुरुजी का नामस्मरण करते ही वे भक्ति की सहायता करने झट से आ गए। गुरुकृपा से प्रपंच रूपी ज्वर तो उतर गया। परंतु विषयोपभोगों की कामनाओं की फुन्सियाँ उठ गयी। उसपर वैराग्य रूपी दुल्हे ने कहा, "विषयोपभोगों से युक्त भक्ति मुझे नहीं चाहिए।" उसपर सतगुरुजी को घर आमंत्रित किया गया तथा जीवात्मा ने उनकी पूजा की, उसके पश्चात सतगुरुजी ने भक्ति पर आत्माकार वृत्तियों के अक्षत डाले, जिससे भक्ति सशक्त हो गयी। यह देखकर वैराग्य हर्षित हुआ। भक्ति तथा वैराग्य का विवाह संपन्न होते ही सभी आनंदित हो गये। इस प्रकार सतगुरुजी ने भक्ति

तथा वैराग्य का संयोग कराया। यह कथा सुनने से सतगुरुजी की कृपा से भवरोग का निवारण होगा। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह पैंतालीसवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥